१ ओअंकार (ੴ) सति गुर प्रसादि

रामा कृष्णा मिशन

तुल्नातमिक धर्म अध्ययन

>< >< >< >< >< >< >< >< >< >< ><

मूल रूप में

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)

लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंध

Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary

Mob. : 098149- 66882

Download Free

रामा कृष्णा मिशन

जैसा कि मिशन के नाम से ही स्पष्ट है कि इस मिशन के संस्थापक साधू रामा कृष्णा जी थे। ये 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध महापुरुष कहे जाते हैं। आपकी ईश्वर भक्ति, कोमल स्वभाव व साधु वृत्ति बहुत आकर्षक थी। इन्होंने अनेकों गुमराह हुए नास्तिकों को भी आस्तिक बना दिया। श्री ईश्वर चंद्र व नवीन काल के प्रसिद्ध विद्वान, स्वामी विवेकानंद जी, जिन्होंने अमरीका आदि देशों का रटन करके हिंदू फिलासफी को, अपने प्रवचनो द्वारा प्रचारित किया और उसकी धाक जमाई थी, वह भी आप के ही शिष्य थे।

श्री रामाकृष्णा की जीवनी

श्री राम कृष्ण जी का जन्म बंगाल के एक 'कमाल पूकर' नाम के गांव में हुआ। आप के पिता खुदी राम एक गरीब ब्राहमण थे। माता का नाम चंदर मणी था। खुदी राम का खानदान चिरकाल से गांव देरी पुर, जिला हुगली (बंगाल) का निवासी चला आ रहा था। पर खुदी राम जी को मजबूर हो कर अपना पैतृक गांव छोड़ कर कमार पूकर में रिहायश करनी पड़ी। इस का कारण इन का व्यवहारिक व सिद्धांतवादी होना था। कहते हैं कि देरी पुर के मुंहलगे व अहंकारी जिमींदार ने किसी मुकदमे में इन को झूठा गवाह बना कर पेश करना चाहा, पर बहुत लोभ व लालच देने पर भी यह राजी न हुए। इसके कारण उसने इन को ऐसा तंग करना शुरू किया कि लाचार हो कर इन को अपना वास्तविक गांव छोड़ना ही पड़ा और आप पड़ोस के एक और गांव, कमार पूकर मे जा बसे। इस स्थान पर किसी भद्र पुरुष ने आप को रहने के लिए स्थान व खेती करने के लिए भूमि दे दी। इस प्रकार वे अपना व अपने परिवार का जीवन निर्वाह करने लग गए। इस गांव में रहते हुए खुदी राम को छः वर्ष हो गए थे। इस का बड़ा लड़का रमा कुमार पढ़ लिख कर अब घर का काम काज़ संभालने योग्य हो चुका था। इस ने अपनी एक लड़की का विवाह भी कर लिया था। अब इस को घर की ओर से कोई चिंता न थी। इसलिए सन् 1924 में यह रामेश्वर की तीर्थ यात्रा करने को चल दिए और वहां से जब वापिस आए तो इनके घर में एक बालक ने जन्म लिया। रामेश्वर विश्वासी ने नवजन्मे पुत्र का नाम भी रामेश्वर ही रख दिया। इसके पश्चात सर्व मंगला नाम की एक और पुत्री ने इनके घर जन्म लिया। 60 साल की आयु में खुदी राम फिर तीर्थ यात्रा पूरी करके घर वापिस आया और वापसी पर 8 फरवरी 1838 को इस के घर ईश्वर ने एक और बालक को जन्म दिया जिसका नाम गदाधर रखा गया। बाद में यही गदाधर राम कृष्ण के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पांच वर्ष की आयु में गदाधर को संस्कृत पाठशाला में संस्कृत पढ़ने के लिए डाला गया । पर बालक कुछ संत वृत्ति वाला था। इसका अधिकाशं रुझान आने-जाने वाली ज्ञान व भजन मंडलियों की ओर रहता था। यह इन से कथ कहानियां व भजन आदि सुनता व उन के ही गायन वादन में व्यस्त रहता। इसलिए पढ़ाई में इस की रुचि नहीं लगी। अभी गदाधर मात्र सात साल का ही हुआ था कि खुदी राम चल बसे।

पिता के देहावसान के पश्चात बड़े पुत्र राम कुमार ने ही घर की देखभाल की। **9 वर्ष** की आयु में गदाधर की जनेऊ धारण करने की रस्म अदा की गई। कुल रीति के अनुसार जनेऊ पहनाने के पश्चात इनको अपनी जाति की किसी बूढ़ी औरत से भिक्षा मांगना जरूरी था। पर बालक गंगाधर ने भिक्षा के लिए धनी नाम की एक लुहार स्त्री का घर चुना। ब्राहमणों की रीति के अनुसार शूद्र के घर की भिक्षा लेना विवर्जित था। अत: उन्होंने गदाधर के इस चुनाव को पसंद नहीं किया और आज्ञा न दी। गदाधर ने पंडितों की एक न मानी और रोटी पानी छोड़ कर कहीं छिप गए। आखिर राम कुमार को अपने छोटे भाई की बात को मानना पड़ा और वह उस धनी नाम की, लोहार जाति की महिला के घर से ही भिक्षा ले कर आया।

घर के खर्च पर निर्वाह की कठिनाई से तंग हो कर राम कुमार ने कलकत्ता में एक संस्कृत विद्यालय खोला और वहां पर से ही गदाधर को भी पढ़ाने का प्रयत्न किया। पर उनका यह प्रयास भी सफल न हो सका।

कलकत्ता की एक धनाढय विधवा राणी राशि मणी ने कलकत्ता के उत्तर की ओर गंगा के घाट पर काली माई का एक मंदिर लाखों रुपए व्यय कर के बनवाया। राम कुमार व गदाधर दोनों ही इस मंदिर के पुजारी बन गए। यहीं पर ही एक दक्ष ब्राहमण जाति के भगत मान से गदाधर को दीक्षा दिलवाई गई और इसी दिन से गदाधर की आत्मिक उन्नति का आरंभ हुआ। इस से थोड़े ही समय पश्चात राम कुमार का कालवास हो गया जिसका असर राम कृष्णा पर ऐसा हुआ कि वह वैरागी हो कर शमशान भूमि के घने जंगलों में ही दिन काटने लग गया । जब किसी मित्र ने उन से उनके इस वैराग्य की दशा का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया, " जन्म काल से जीवन आठ प्रकार के बंधनों में कैद है - घृणा, लज्जा, कुल, अभिमान, विद्या अभिमान, जाति अभिमान, भय, मौत का डर, देह अभिमान, -ये आठ बंधन हैं। मैं इन सब से आजाद हो कर समाधि में लीन होना चाहता हूँ।" आप पर वैराग्य ने इतना जोर डाला कि वस्त्र तक भी आपने त्याग दिए और नग्न विचरण करने लगे।

कुछ समय बाद राणी राशी मणी का भी देहांत हो गया। अब उस की सारी संपत्ति के वारिस मथरा बाबू बने। मथुरा बाबू श्री राम कृष्ण जी के बड़े श्रद्धालु थे। वे उनको कुछ दौलत देना चाहते थे पर राम कृष्ण जी ने लेने से इनकार कर दिया। स्वामी विवेका नंद की एक अमरीकन चेली निवेदित्ता ने नीचे अंकित प्रश्नोत्तर अपनी अंग्रेजी की एक पुस्तक में दिए हैं :

मथुरा बाबू : क्या परमात्मा अपने बनाए नियमों को बदल नहीं सकता ?

श्री रामा कृष्ण : जो परमात्मा नियम बना सकता है, व ही बदल भी सकता है।

मथरा बाबू : क्या परमात्मा लाल फलों वाली वेल में सफेद फूल उगा सकता है और परिवर्तन ला सकता है ?

रामा कृष्ण : हां, वह सब कुछ कर सकता है।

दूसरे दिन ही श्री रामा कृष्ण ने मथुरा बाबू को फूलों का एक पौधा ला कर दिखला दिया जिस के साथ लाल व सफेद दोनों प्रकार के फूल लगे हुए थे। यह वृतांत सन् 1855 - 58 का है। यह चार साल, श्री राम कृष्ण जी के जीवन व आत्मिक उन्नति के साधनों के लिए बहुत उच्च स्थान रखते हैं। वह कई बार साधु संतों का जूठा भी खा लिया करते थे।

कहते हैं कि राम कृष्ण की मस्तानी दशा देख कर मथरा बाबू उनकी परीक्षा लेने के लिए एक बार उनको चकले में एक वेश्या के पास छोड़ कर स्वयं बहुत तेजी से बाहर आ गए। राम कृष्ण बहुत मधुर सुर में उसको मां – मां पुकारने लगे। यह दृश्य देख कर वेश्या आपके चरणों पर गिर पड़ी। दूसरी वेश्याओं ने भी देख कर चरणावंदना की। मथुरा बाबू यह सब कुछ देख कर हैरान हुए तो उनका विश्वास और दृढ़ हो गया।

उनकी माता चंदर मणी व रामेश्वर को जब गदाधर की इस मस्तानी व भोली दशा का पता चला तो वे बहुत चिंतातुर हुए। उन्होंने उसको अपने गांव कमार पूकर में बुला लिया। गांव के लोगों ने समझा कि शायद यह भूत प्रेतों के प्रभाव में है। उन्होंने झाड़ फूक के लिए मां को प्रेरित किया। उस बेचारी ने झाड़ फूक भी करवाई पर यह भी अर्थहीन रहा।

पर गांव में रहते हुए कुछ समय पश्चात अपने आप ही राम कृष्ण का दिल लग गया। वह घर का काम काज भी करने लग गए और हंसने खेलने लग गए। स्वाभाविक तौर पर इस परिर्वतन ने मां के दिल में खुशी की लहर छेड़ दी। वह इस के विवाह के आयोजन में लग गई। पहले तो राम कृष्ण की मस्तानी दशा देख कर किसी ने हाँ न की, पर अंत में जै राम वटी नाम के एक निकटवर्ती गांव के ब्राहमण राम चंद्र उपाध्याय ने, अपनी लड़की शारदा मणी का रिश्ता दे दिया और थोड़े ही दिनों में विवाह भी हो गया।

विवाह बहुत गरीबी की दशा में हुआ था। लोकलाज को रखने के लिए चंद्र मणी ने पड़ोसिन के गहने मांग कर दाज में लगाए थे। वह नववधु ने पहने हुए थे। पड़ोसिन को गहने वापिस करने भी जरूरी थे। रामकृष्ण ने यह अपने जिम्मे ले लिया और एक दिन सोई हुई पत्नी के सारे गहने उतार लिए और मां को दे दिए। पड़ोसिन को गहने तो वापिस कर दिये गए घर मे बहू के जागने पर खूब शोर मच गया। मां ने बहु को प्यार से समझा दिया और ढांढस बंधाई कि तेरा पति जल्द ही कमाई करके तुझे गहनों से लाद देगा। कहते हैं कि थोड़े दिनों के पश्चात, राम कृष्ण जी का एक श्रद्धालु सेठ 3000 रुपए भी भेंट ले कर स्वामी जी को देने को आया। उन्होंने कहा मुझे तो इस की जरूरत नहीं। आप शारदा मणी को यह गहनों के लिए दे दो। पर जब दोनों उसको यह भेंट देने को गए तो उसने उत्तर दिया ''मेरे स्वामी, मुझे गहनों कपड़ों की जरूरत नहीं रही। मैं रुपया ले कर क्या करूंगी?''

विवाह से कुद समय पश्चात ही आप फिर कलकता आ गए और दुखनेश्वर के काली माई के मंदिर में पूजा पाठ करते रहे। उन्हीं दिनों में दक्षिणेश्वर में एक योगेश्वरी नाम की संन्यासिन रहती थी। उस ने गदाधर को आत्मा उपदेश के साथ-साथ वैष्णव तांत्रिक ग्रंथों का भी अच्छी तरह पठन-पाठन करवाया। उन्होंने योगेश्वरी से योगाभ्यास भी सीख लिया। इस योग अभ्यास के करने से आप की देह अरोग्य व सुंदर हो गई। थे तो आप वैष्णव, पर काली देवी के भी पुजारी थे।

दक्षिणेश्वर का मंदिर गंगा के किनारे पर एक एकांत स्थान पर था। बड़ी बात यह थी कि यह गंगा सागर व रामेश्वर आदि तीर्थो के ठीक बीच रास्ते में पड़ता था। इसलिए यात्री साधु संतों के लिए एक अच्छा टिकाना बना हुआ था। नित्य प्रति कोई न कोई पहुंचे एक साधु यहां आए रहते थे। एक दिन एक पंजाबी सन्यासी साधु महात्मा, तोता पुरी जो बचपन में साधु बन कर महंत बने थे, दक्षिणेश्वर में आए। इन की संगत ने गदाधर को बहुत प्रभावित किया और आखिर इन से दीक्षा ले कर, सन्यास धारण कर लिया। इसी दिन से ही आप

का नाम गदाधर से बदल कर रामकृष्ण रखा गया। कुछ समय तक महात्मा तोता पुरी जी दक्षिणेश्वर में ही रहे और श्री राम कृष्ण जी को आत्मा उपदेश करते रहे। जब वे चले गए तो रामा कृष्ण बीमार हो गए पर फिर जल्द ही स्वस्थ हो गए।

अब दिन-प्रति-दिन आपकी आत्मिक अवस्था ऊँची होती गई। अब वे इस वृत्ति के हो गए कि हर महजब से सज्जन उनको प्यारे लगने लग गए थे। उन्हीं दिनों में आप प्रगतिशील इसाई पादरी व मुसलमानों फकीरों को मिलते रहते थे। उनके धर्म सिद्धांतों को सझमने का प्रयत्न करते थे। उनको पराधर्मीयों का भी काफी ज्ञान हो चुका था। आप बच्चों के साथ भी बहुत प्यार किया करते थे। मंदिर के आस पास झाड़ू भी लगते थे और संत साधुओं का शीत प्रशाद भी कई बार सेवन कर लेते थे।

अप्रैल 1874 में आप की पत्नी, शार्दा मणी आपको मिलने को कलकत्ता आई। उसके जीवन पर भी अपने सन्यासी पति के जीवन का अच्छा प्रभाव पड़ा। कुछ समय कलकत्ता रहने के पश्चात वह अपने गांव वापिस चली गई। इस समय स्वामी जी की काफी प्रसिद्धि हो चुकी थी। पर आप उसी तरह निर्माण थे। उनके दिल में यह कभी नहीं आया कि लोग उनके पास चल कर आएं, बल्कि जहां कहीं भी इन को अच्छे साधु के आगमन का पता चलता तो आप तुरंत वहां पहुंच जाते थे।

ब्रहम समाज के मुखी केशब चंद्र सेन 1875 में एक बार दक्षिणेश्वर के समीप एक स्थान पर गए। पता चलने पर श्री रामा कृष्ण जी भी उनक को मिलने को गए और बहुत आदर सम्मान से पूछा, ''मैंने सुना है आपको ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं?'' बजाए इसके के कि केशव चंद्र कुछ उत्तर देते, उनकी अडोल समाधि लग गई और कितना समय वे मग्न रहे। दर्शकों पर आपके इस ईश्वर प्रेम का आश्चर्यजनक व गहरा प्रभाव पड़ा। इस के बाद एक बार फिर वे किसी ब्रहम समाज के जलसे में गए। प्रार्थना के समय यह भी साथ शामिल हुए। प्रार्थना के समय बहुत से लोग आंखें बंद कर के चुप बैठे थे। **''प्रार्थना संबंधी, क्या राय है?''** आप ने हंस कर उत्तर दिया, ''जैसे सुबह के समय बंदर बहुत शांति से चुप चाप बैठ जाते हैं। पर सोचते यही हैं कि अगले बगीचे में से फल तोड़ेंगे व चुरा कर खाएंगे। यही दशा इन लोगों की है। ऊपर से तो ध्यान मग्न व शांत दिखलाई देते हैं पर इन के मन में यही धुकधुकी लगी हुई है कि किस ढंग से धन कमाएं।'' आप ने निर्मल हुए हृदय में से निकले वचनों का किसी ने भी बुरा न मनाया।

आप जी के जीवन में अजीब चुंबकीय शक्ति थी। बड़े बड़े नास्तिक इन की संगत से प्रभावित हो कर महापुरुष बन गए।

डाक्टर राम चंद दत्त व उसका एक संबंधी सरेंद्र, नास्तिक भी थे और शराबी भी । पर दक्षिणेश्वर में आप की संगत द्वारा ईश्वर के भगत वे नेकजन बन गए।

1880 में बंगाल के एक प्रसिद्ध धनाढय का पुत्र राखाल चंद्र घोष आप की संगत करके, आप पर इतना मोहित हुआ कि इन के पास ही रहने लग गया था। बाद में यही स्वामी ब्रहमानंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही रामा कृष्ण मिशन का पहला प्रधान नियुक्त किया गया।

बिहार राज्य का लाटू नाम का एक सज्जन आप की संगत के कारण बहुत करनी वाली सिद्धपुरुष हो गया।

1880 में कलकत्ता के हाईकोर्ट के वकील का लड़का जिस का नाम नरिंदर था और जो एफ. ए. में पढ़ता था, आप को मिला और पूछेने लगा, 'क्यों जी ?आपने ईश्वर के दर्शन किये हैं ?'' तो आपने उत्तर दिया, ''जी हां किये हैं'' उसने फिर कहा, ''क्या मुझे भी वह दर्शन करवा सकते हो ?'' श्री राम कृष्ण जी का उत्तर इतना गंभीर व सूझ-बूझ वाला था कि जिस को सुन कर नये-नये अंग्रेजी पढ़े का सारा नशा टूट गया। कुछ समय आप की सतसंगत करने के पश्चात यही नरेंद्र स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इसी प्रकार अन्य कइयों के जीवन परिवर्तन आपकी संगत में हो गए। नीचे लिखे सज्जनों के नाम जो आपके गहरे, प्रभाव में आए, वर्णन योग्य हैं:

महेंद्र नाथ गुप्ता, ईश्वर चंद्र विद्या सागर, प्रसिद्ध पंडित शशाधर तरक चूड़ा मणी, गिरीश चंद्र घोष, दुर्गा चरण आदि।

सन 1885 की गर्मियों में, श्री राम कृष्ण जी के कंठ में दर्द हो गया। कलकत्ता में काफी इलाज करवाया गया पर कोई आराम न आया। फिर डाक्टरी परामर्श के अनुसार आपको हवा पानी बदलने के लिए 11 दिसंबर 1885 को काशीपुर ले जाया गया। पर रोग ने वहां पर जा कर भी पीछा न छोड़ा। अंत में 15 अगस्त 1886 को आप को दैवी बुलावा आ गया और आप की आत्मा शारीरिक वस्त्र त्याग कर उड़ गई।

काफी समय तक गृहस्थी रहने के बावजूद भी आप नि:संतान ही रहे। पर आपकी सादगी, पवित्रता व भक्ति भावना ने कइयों का जीवन सुधार दिया।

मिशन का प्रचार

जैसा कि पूर्व में दर्शाया जा चुका है, स्वामी विवेका नंद जी आपके प्रसिद्ध चेले थे। 23 साल की, भर जवानी में नरेंदर नाम के एक वकीलज़ादे ने संन्यास ग्रहण करके परम हंस श्री राम कृष्ण जी के देहांत के पश्चात, देश-देशांतरों का रटन किया। अमरीका में शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन पर और कई स्थानों पर लगभग एक हजार भाषण दिये और मिशन का पुरजोर प्रचार किया। वेदांत सोसायटी स्थापित की और 1897 में रामा कृष्ण मिशन स्थापित किया।

कलकत्ता के समीप आलम बाजार में 1886 में एक मठ भी स्थापित किया।

कहा जाता है कि एक अमरीकन ने स्वामी विवेकानंद जी को पूछा, ''मैंने सुना है कि हिंदुस्तानी मूर्ति पूजा करते हैं ?'' उत्तर में आपने कहा- ''आप शराब, स्त्री व दौलत ***(Wine, Women and Wealth)*** के पुजारी हो।''

रामा कृष्णा मिशन में शामिल होने वाले साधु अच्छे पढ़े लिखे, विद्वान व ग्रेजुएट होते हैं। जहां ये भारत में स्थान स्थान पर रटन करके धार्मिक विचार व भ्रातृत्व सुधार करते हैं वहीं प्रदेशों में पहुंच कर भी प्रचार करते हैं।

अमरीका, इटली, इंगलैंड आदि स्थानों पर इस मिशन के प्रचारक पहुंचे हुए हैं और पहुंचते रहते हैं। ये कोई निजी संपत्ति नहीं बनाते हैं। इस मिशन के सन्यासी साधु बहुत काम करते हैं।

इस मत के मुख्य सिद्धांत इस प्रकार हैं :

(1) ज्ञान देने में कभी अधीर न होवो।

(2) सब से पहले स्वयं ज्ञान प्राप्त करो।

(3) ईश्वर के रूप व गुणों संबंधी पचड़े में न पड़ो।

(4) भजन करो।

(5) वाहिगुरु अर्थात प्रभु के सम्मुख अपना दिल खोल कर रख दो। उसका दैवी प्रकाश आपको पवित्र करेगा।

(6) किसी मत या मंदिर की प्रवाह न करो। सब का मूल सत्य ही है। मनुष्य जितना इस को अधिक प्राप्त कर सके उतना ही अच्छा है।

(7) किसी मत पर हमला न करो। प्रत्येक मत में कुछ न कुछ सत्य जरूर होता है। धर्म का अर्थ केवल कहने मात्र या मतों का समुदाय नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति करना व उस में टिकना ही धर्म है। इस बात को अपने जीवन में ढाल कर सिद्ध करो।

(8) वेद शास्त्रों की शिक्षा का पालन करो। इस मिशन का अधिक प्रभाव बंगाल में ही हुआ है। 1956 - 60 में दक्षिण कलकत्ता व कई अन्य स्थानों पर इस मिशन के कई स्कूल, कालेज व अस्पताल और आश्रम हैं।

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882